बाल काव्य प्रसून

Vijoy Shankar Mallik

विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

बाल काव्य प्रसून

(मैथिलोपदेशी कविता माला)

Vijoy Shankar Mallik

विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

इम्प्रेशन पब्लिकेशन
पटना

Vijoy Shankar Mallik

बाल काव्य प्रसून
(मैथिलोपदेशी कविता माला)

प्रथम संस्करण : 2018
सर्वाधिकार : विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'
ISBN : 978-81-934306-4-4
आवरण : सुश्री अलंकृता तन्नु
मूल्य : रु. 390.00
प्रकाशक : इम्प्रेशन पब्लिकेशन
सालिमपुर अहरा 'बॉलिया'
कदमकुआँ,
पटना - 800003
मो. - 8877663597
मुद्रक : बी.के.ऑफसेट
नवीन शाहदरा,
नई दिल्ली-32

अनुक्रम

1.	श्री भगवद्वन्दना	1
2.	भेल भिनसर बौआ	2
3.	पढू बौआ पढू यौ	3
4.	सुन्नर काज	4
5.	देश गीत-1	5
6.	देश गीत-2	6
7.	राईट बन्धु	7
8.	खूब खेला	9
9.	थेत्थर	10
10.	न्यूटन	11
11.	सुर-बेसुर गीत	13
12.	जे छी से तऽ अहीं छी	14
13.	सीया सुकुमारिक परिणय	15
14.	देख तमासा	16
15.	ठक (नागा)	18
16.	स्वदेशी मेला	20
17.	कर्ज-वर्ज	22
18.	खैनी चून	23
19.	विधर्मीक मने	24
20.	दोहा	26
21.	शशि	28
22	चानो मे छै दाग	29
23.	देशक शान	30
24.	रानी बेटी राजा बौआ!	32
25.	तिल सँकराति	33

Vijoy Shankar Mallik

56. खेल आ व्यायाम 79
57. बिखधर (विषधर) 80
58. बाढ़ि 81
59. ठंड लू फ्लू 82
60. संक्रामक रोग 83
61. प्रार्थना 84
62. फर्स्ट एड 85
63. रोगमुक्त 87
64. मानव शरीर 89
65. नर ओ नारी 91
66. नैतिकता 93
67. जीवन शिक्षा 94
68. हँसी 96
69. बिजली 97
70. इलेक्ट्रोनिक्स 99
71. भौतिक आ रशायनिक परिवर्त्तन 100
72. पालीमर्स 102
73. कपड़ा 104
74. चरखा 106
75. स्वयम् सेवी 108
76. देश प्रेम (गीत) 110
77. संगति 111
78. सही रास्ता 113
79. बाचाल 115
80. बुद्धि विलास 116
81. हिंसा-अहिंसा 118
82. याचना 119
83. शंकराचार्य 120
84. $C_6H_{12}O_6$ ग्लुकोज आ कोरामिन 122
85. धर्म 124

Vijoy Shankar Mallik

राईट बन्धु

बाबा, कहियौ एक कहानी।
संच मंच हम बैसल रहब
हँ मे हँ मिलबैत रहब,
होयत ने परेशानी,
बाबा कहियौ एक कहानी।

Vijoy Shankar Mallik

सुनब कहानी तौं भल सुनू।
शब्द शब्द के मने गुनू।
बहुत दिन पूर्वक ई पिहानी,
हवाइ जहाज के जन्म कहानी।
बाबा, कहियौ एक कहानी।।

अहीं सभक सन दूगो बच्चा,
अमरीका में मिल्टन के घर
जन्मल इंडियाना बीच शहर,
चारि बरिस के अभि अन्तर पर
ओरविल विलवर नाम निशानी।।
बाबा, कहियौ एक कहानी।।

बड़ा खेलक्कर तोरल जोरल,
कते खेलौना पशु पक्षी सन।
चभियेला पर उड़ि परै छन,
रबर बाँस कागज सँ निर्मित।
उड़ि जाइत छल कोनो धरानी।
बाबा, कहियौ एक कहानी।।

उड़न मशीनेक कते नमूना,
कते बनेलक अपन खेलौना।
अखबारक लेल छापाखाना,
सोचैत रहल ओ, रचैत रहल ओ,

पारस पाथर

अइ दुनिआँ मे एलहुं तँऽ चिन्हू,
उत्तम जीवन कोन।
खुद मोख्तारी आकि आनक,
घर जा फाँकब नोन।।

दुर दुर सुनितहु धुरखुर ठेकए,
मानि अपन अधिकार
गारि मारि सुनितहु अरारि कर
थेथरक नहि परकार।।

Vijoy Shankar Mallik

अभिमानक धुरखेल खेलिखेलि,
कियो बल पौरूष देखबय।
बोल अंगोर संगोर निखिद चलि,
निशिचर बनि बनि भरमय।।

बहुत लोक एहनो हो जग मे,
जे विषकुम्भ पयोमुख।
फफरदलाली, निरीह हलाली,
अनकर दुखे परमसुख।।

किन्तु कतेको नरतनधारी,
नारायण पद पाओल।
सहज सुहृद बनि जन जन सेवल,
धरती स्वर्ग ठेकाओल।।

जीव जिवन्त रहै अछि ताधरि
जावत ओक्कर मान।
स्वार्थ समुंदर पार करए भरि,
अमिय कलश करि दान।।

संत सुमंत सुजन्त सुखन्ता,
नामकरण ओ पाबय।